श्री महावीराय नमः

परस्परोपग्रहो जीवानाम

समग्र

प्रवचन :
आचार्य श्री विद्यासागर जी

प्रस्तुति :
मुनि श्री क्षमासागर जी

प्रकाशक
आगम प्रकाशन
5373, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)
दूरभाष : 01274-253446

प्रेरक प्रसंग : परम पूज्य आर्यिका श्री दृढ़मति माता जी का
पच्चीसवाँ पावन वर्षायोग, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : परम पूज्य आर्यिका श्री दृढ़मति माता जी ससंघ

संस्करण : चतुर्थ (1100 प्रतियाँ) सन्-2015

मूल्य : 150/- रुपये मात्र (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्रकाशक : अजित प्रसाद जैन
आगम प्रकाशन, 5373, जैनपुरी रेवाडी (हरियाणा)
फोनः 01274-253446

पुण्यार्जक : विजय कुमार जैन सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द जैन
डब्लू-21, नवीन शाहदरा-दिल्ली

सहयोग : - जगदीश प्रसाद जैन, ए-2/14, शक्तिनगर, एक्सटैंशन, दिल्ली
- श्री अरविन्द कुमार जैन, सुकेश जैन, सुकान्त जैन,
मैं. मेहरचन्द जैन एण्ड संस, गुड बाजार, रेवाडी।
- श्रीमती सविता जैन धर्मपत्नी श्री देवेन्द्र कुमार जैन, सर्राफ, रेवाडी।
- श्री अनूप चन्द जैन, जैनपुरी, रेवाडी।

प्राप्ति स्थल : अजित प्रसाद जैन
5373, जैनपुरी, रेवाड़ी (मोब.: 09896437271)
: जैन साहित्य सदन
श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर
चांदनी चौक, दिल्ली-6, फोन : 011-23253638
: ब्र. श्री राकेश जैन
सिद्धायतन, महावीर नगर, खुरई रोड़, सागर (म.प्र.)
फोन : 09993155667
: अमर ग्रन्थालय
C/o श्री दिगम्बर जैन, उदासीन आश्रम
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2545744
: श्री निर्मल कुमार जैन, अध्यक्ष
पिसनहारी मढ़ियाजी, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 09407852654
: ब्र. जिनेश जैन
साहित्य सदन, पिसनहारी मढ़ियाजी के सामने
जबलपुर (म.प्र.), फोन : 09424690607

मुद्रक : आरसी प्रैस, 70ए, रामा रोड़,
इंडस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
फोन : 09871196002

सादर समर्पण

रत्नत्रय के संसाधक, चारित्र-चूड़ामणि,
समाधि सम्राट दिगम्बर जैनाचार्य
108 श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज की
परम शिष्या आर्यिका
105 श्री दृढ़मति माता जी
के ससंघ पावन रजत वर्षायोग के सुअवसर पर
आगम प्रकाशन, रेवाड़ी, द्वारा
प्रकाशित प्रस्तुत कृति
'समग्र (खंड चार)'
सादर समर्पित
प्रकाशन का यह विनम्र योगदान,
एक अल्प-सा प्रयास
आशा है, विश्वास है
आपके मन और मस्तिष्क को
प्रभावित करने में समर्थ होगा।

प्रकाशकीय

(आगम प्रकाशन का प्रथम संस्करण)

प्रस्तुत कृति-''समग्र खण्ड चार'' का चतुर्थ संस्करण (आगम प्रकाशन) प्रकाशित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रवचनों का यह संकलन पाठकों के हृदय में धर्म के पालन करने के लिए अपूर्व भावना का संचार कर देता है। अनेक भ्रांतियाँ व ग्रंथियाँ जो मन में जाने-अनजाने संग्रहीत होती रहती है उनका समाधान सहजता व सरलता से मिल जाता है। आवश्यकता है ध्यान से पढ़ने की, चिन्तन की, मनन की एवं जीवन में तदनुरूप परिवर्तन लाने की। सभी प्रवचनों का सार संक्षेप में विचार किया जाये तो एक ही है कि सम्यक् श्रद्धा के साथ चरण आचरण की ओर बढायें। ऐसा किये बिना हमारा कल्याण सम्भव नहीं।

''प्रवचनामृत'' के माध्यम से सोलह कारण भावनाओं का चिन्तन, ''गुरुवाणी'' में पांच महाव्रत-अणुव्रत ग्रहण करने के भाव, ''प्रवचन परिजात'' में सात तत्त्वों का निरूपण, ''प्रवचन पंचामृत'' व ''प्रवचनिका'' में पंच-कल्याणकों का वर्णन, ''प्रवचन पर्व'' के माध्यम से दश धर्म को धारण करने की प्रेरणा एवं ''प्रवचन प्रदीप'' व ''पावन प्रवचन'' के द्वारा हमारे जीवन में उत्थान कैसे हो, हम अपने जीवन को पतित से पावन कैसे बनायें-यह मार्ग दर्शन आचार्य श्री ने हमको दिया है। यह उनकी महती अनुकम्पा है कि बहुत ही सरल शब्दों में विषयों को स्पष्ट किया है जिससे कहीं कोई भ्रांति शेष नहीं रह जाती। महामनीशी पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी द्वारा प्रवचनों को संकलित व सम्पादित किया गया है, हम अत्यन्त उपकृत हैं।

आज का मानव सारे संसार को जानने व देखने में लगा हुआ है। आचार्य कहते हैं कि- मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? यहाँ से कहाँ जाऊँगा? और मुझे क्या करना चाहिए? इस ओर कोई ध्यान ही नहीं है इससे बड़ा और आश्चर्य क्या होगा?

पश्यन्ति हि जनाः सर्वे, सर्वमेव जगत् सदा,
द्रष्टारं नैव पश्यन्ति, किमाश्चर्यमतः परम्।

एक शायर ने कहा-शरीर और आत्मा का रिश्ता कैसा विचित्र रिश्ता है। पूरी उम्र एक दूसरे से गुँथ कर रहे किन्तु परिचय भी नहीं हो पाया -

जिस्म औ रूह का रिश्ता अजीब रिश्ता है,
उम्र भर साथ रहे और तआरूफ न हुआ।

आचार्य श्री के प्रवचनों का यह संकलन इन सब प्रश्नों का समाधान करता हुआ सा प्रतीत होता है। आवश्यकता है आत्मचिंतन की, आत्ममंथन की और फिर सही-सही आचरण को अपनाकर मोक्षमार्ग की ओर कदम बढाने की।

प्रस्तुत संकलन के बाद भी आचार्य श्री के पावन प्रवचन एवं उद्‌बोधन अनवरत अद्यावधि चल रहें हैं। उन सभी का संकलन भी अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। इसका प्रयास अवश्य होना चाहिए। अवसर मिला तो ''समग्र'' खण्ड पाँच के रूप में प्रकाशित करने का पूरा-पूरा प्रयास किया जायेगा। आचार्य श्री का पचासवां दीक्षा दिवस आने वाला है उससे पहले यह कार्य भी सम्पन्न हो जाये तो शुभ होगा।

इस कृति के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सभी बन्धुओं को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। सुन्दर छपाई के लिये हमारे प्रिंटर श्री मनोहर लाल जैन, दीप प्रिंटर्स, बधाई के पात्र हैं।

अन्त में परम पूज्या आर्यिका दृढ़मती माता जी (ससंघ) के चरण कमलों में विनयावनत शत-शत नमन।

स्वाध्यायं भूयात्।

अजित प्रसाद जैन
संयोजक
आगम प्रकाशन, रेवाडी (हरियाणा)

आमुख

(तृतीय संस्करण से)

आचार्य विद्यासागर जी अपनी सक्षम एवं सफल सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। उनके प्रवचनों की स्वाभाविक उर्वरता के माध्यम से ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास की सुनहरी फसल लहलहाती रहती है। विंध्यांचल और सतपुड़ा पर्वत श्रंखलाओं को लांघते हुये उन्होंने प्रायः सम्पूर्ण राष्ट्र में बसे व्यक्तियों को मोक्ष पक्ष पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने सांस्कृतिक अस्मिता को नई गहराई और विस्तार प्रदान किया। आज वे जैन संस्कृति के अत्यधिक प्रभावी संत ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के विश्व दूत बन गये हैं।

2. आचार्य विद्यासागर जी जैनागम के महत्वपूर्ण सूक्त **'मित्ती में सव्व भूदेषु'** को प्रतिक्षण जपते रहते हैं। उनके हृदय से निसृत प्रेम एवं आत्मीय स्नेह की ध्वनि तरंगे सदैव उनके व्यक्तित्व के चारों ओर व्याप्त रहती हैं। उनका विराट आध्यात्मिक दर्शन क्षमा और मैत्री की ठोस आधार-भूमि पर स्थित है। उनके द्वारा प्रभावी ढंग से प्रचारित और प्रसारित क्षमा और मैत्री की भावनाएं अहिंसक चेतना की जननी हैं। वे सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक रूप से अहिंसक चेतना को सम्पूर्ण राष्ट्र में विस्तीर्ण कर रहे हैं। उनकी शक्ति निस्सीम है और उनका प्रभाव अपरिमेय है। उनके पवित्र मन की अव्यक्त विचार तरंग जन-जन को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। अहिंसा की उर्वर भूमि पर उन्होंने सर्वत्र क्षमा, मादर्व एवं आर्जव धर्म की जीवंत मूर्तियाँ स्थापित की हैं। इन धर्मों के सर्वांगीण विकास के माध्यम से उन्होंने अपनी समता की साधना को सिंचित किया है। उनके अंतःकरण की पवित्रता और निर्मलता से उद्‌भूत भाव धारा प्राणीमात्र के कल्याण के लिए सदा प्रवाहमान रहती है। उनका व्यक्तित्व विलक्षण, व्यापक, सहज, असीम और आकर्षक है। वे अपने प्रवचनों के माध्यम से जन-जन के कलुषित विचारों को परिष्कृत और परिमार्जित करते हुये राष्ट्र के अभ्युदय, सुख शांति और कल्याण के लिए प्रयत्नशील हैं। वे आधुनिकतावादी,

उठती/उड़ती जिज्ञासाओं की चिड़ियों को पहचानने की अनुपम दृष्टि और आत्मानुशासन के धरातल पर जिन-शासन की अश्रुत-पूर्व-बागडोर। एकाकी साधना के दुर्गमों में विचरते हुए अनुभूतियों की लेखनी से श्वेत पृष्ठों को रंगा और अभी भी रंगते ही जा रहे हैं, बहुभाषाविद् हो, साहित्य जगत में प्रवेश कर।

कृतित्व

नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता। (काव्य संग्रह) चेतना के गहराव में (सचित्र प्रतिनिधि काव्य संकलन) मूक-माटी (महाकाव्य) पांच संस्कृत शतक, सात हिन्दी शतकों के अतिरिक्त अनेक जैन ग्रन्थ समयसार, नियमसार, इष्टोपदेश, समाधितन्त्र आदि का पद्यानुवाद तथा हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, बंगला आदि में स्फुट रचनाएँ भी।

जन्म – शरद् पूर्णिमा, संवत् 2003, 10 अक्तूबर 1946
दीक्षा – आषाढ़ शुक्ला पंचमी, संवत् 2025, 30 जून 1968
आचार्यपद – मार्गशीर्ष कृष्णा दूज 2029, 22 नवम्बर 1972

सन्त आचार्य विद्यासागर जी की पावन वाणी सत्यं, शिवं, सुन्दरं की विराट् अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। धर्म, दर्शन, कर्म, संस्कृति और अध्यात्म का पावन पंचामृत उनकी वाणी से नि:सृत होता है। परम्परागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर वे उन्हें हटा देने को व्याकुल हैं। इसीलिए धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्य श्री जी ने उपलब्ध कराई है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व झलकता है निम्न शब्दों के अनुसार उनके जीवन में कि–

धरती सेज, ओढ़ना अम्बर, चिन्तन है इनका भोजन।
जिओ और जीने दो सबको, इनका है जीवन-दर्शन॥
उपदेशामृत से अन्तर के सब पट खोल दिये हैं।
गूढ़ गूढ़ प्रश्नों के उत्तर हँसकर बोल दिये हैं॥

समस्त लोक-कल्याण की कामना से युक्त समभाव ग्राही, मर्मी कवि, सफल अनुवादक, परमज्ञानी, महायोगी जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिनन्दनीय विश्व वन्दनीय श्री चरणों में वन्दन.....वन्दन.....वन्दन।

संकलन एवं सहयोग
आर्यिका पावनमति माता जी

अनुक्रम

प्रवचनामृत

समीचीन धर्म 1
निर्मल दृष्टि 3
विनयावनति 6
सुशीलता 10
निरन्तर ज्ञानोपयोग 12
संवेग 15
त्यागवृत्ति 17
सत्-तप 20
साधु-समाधि; सुधा-साधन 23
वैयावृत्त्य 25
अर्हत् भक्ति 28
आचार्य स्तुति 32
शिक्षा; गुरु स्तुति 34
भगवद् -भारती भक्ति 37
विमल-आवश्यक 40
धर्म-प्रभावना 43
वात्सल्य 46

गुरुवाणी

आनंद का स्रोत : आत्मानुशासन 50
ब्रह्मचर्य : चेतन का भोग 56
निजात्म-रमण ही अहिंसा है 65
आत्म-लीनता ही ध्यान 73
मूर्त से अमूर्त 80
आत्मानुभूति ही समयसार 87
परिग्रह 97
अचौर्य 105

प्रवचन परिजात

जीव-अजीव तत्त्व 114
आस्रव तत्त्व 124
बंध तत्त्व 138
संवर तत्त्व 149
निर्जरा तत्त्व 160
मोक्ष तत्त्व 173
अनेकान्त 186

प्रवचन पंचामृत

जन्म : आत्मकल्याण का अवसर 197
तप: आत्म-शोधन का विज्ञान 205
ज्ञान : आत्मोपलब्धि का सोपान 214
ज्ञान कल्याणक 223
मोक्ष : संसार के पार 232

प्रवचन प्रदीप

समाधि दिवस: आचार्य श्री ज्ञानसागरजी 237
रक्षा-बंधन 242
दर्शन-प्रदर्शन 244
व्यामोह की पराकाष्ठा 248
आदर्श बंधन 256
आत्मानुशासन 265
अंतिम समाधान 274
ज्ञान और अनुभूति 283
समीचीन साधना 291
मानवता 300

प्रवचन पर्व

प्राक्कथन 309
पर्व : पूर्व भूमिका 311
उत्तम क्षमा धर्म 316
उत्तम मार्दव धर्म 323

उत्तम आर्जव धर्म 333
उत्तम शौच धर्म 345
उत्तम सत्य धर्म 359
उत्तम संयम धर्म 368
उत्तम तप धर्म 381
उत्तम त्याग धर्म 389
उत्तम आकिञ्चन्य धर्म 398
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म 406
पारिभाषिक शब्द-कोष 419

पावन-प्रवचन

धर्म : आत्म उत्थान का विज्ञान 432
अंतिम तीर्थंकर- भगवान महावीर 440
परम पुरुष - भगवान हनुमान 446

प्रवचन प्रमेय

(दस प्रवचन)/ (पंच कल्याणक) 455-609

प्रवचनिका

प्रारम्भ 612
श्रेष्ठ संस्कार 619
जन्म मरण से परे 627
समत्व की साधना 631
धर्म देशना 634
निष्ठा से प्रतिष्ठा 638
आगम प्रकाशन 641
प्रकाशित ग्रंथों की सूची 643